लोक-सभा
वाद-विवाद

Gazettes & Debates Unit
Parliament Library Building
Room No. FB-025
Block 'G'

तृतीय माला

खण्ड १३, १९६३ / १८८४ (शक)

१८ फरवरी से २ मार्च, १९६३ / २९ माघ से ११ फाल्गुन, १८८४ (शक)]

3rd Lok Sabha

Chamber Fumigated 18·10·73

चौथा सत्र, १९६३/१८८४ (शक)

(खण्ड १३ में अंक १ से १० तक हैं)

लोक-सभा सचिवालय,
नई दिल्ली

विषय-सूची

(द्वितीय माला, खंड २—अंक ११ से १७—दिनांक २३ मई से ३१ मई, १९५७)

	पृष्ठ
अंक ११—गुरुवार, २३ मई, १९५७	
प्रश्नों के मौखिक उत्तर—	
तारांकित प्रश्न संख्या २८१ से २८८, २९० से २९५, ३१५, ३१८, २९६ से २९८ और ३०० से ३०४ . . .	७१७–४४
अल्प सूचना प्रश्न संख्या ५ और ६	७४४–४८
प्रश्नों के लिखित उत्तर—	
तारांकित प्रश्न संख्या २८९, ३०५ से ३१४, ३१६, ३१७, और ३१९ से ३२५	७४८–५१
अतारांकित प्रश्न संख्या १७० से २०३ और २०५ से २०८ . .	७५४–७०
पटल पर रखे गये पत्र	७७१
रेलवे आय-व्ययक—सामान्य चर्चा . .	७७१–८१६
कार्य मंत्रणा समिति—	
प्रथम प्रतिवेदन .	८१६
दैनिक संक्षेपिका . . .	८१७–१९
अंक १२—शुक्रवार, २४ मई, १९५७	
प्रश्नों के मौखिक उत्तर—	
तारांकित प्रश्न संख्या ३२६, ३२८ से ३३३, ३५८, ३३४ से ३३६, ३३८ से ३४४, ३४९ और ३४५। . .	८२१–४३
प्रश्नों के लिखित उत्तर—	
तारांकित प्रश्न संख्या ३२७, ३३७, ३४६ से ३४८, ३५० से ३५७, ३६० से ३७४	८४३–५४
अतारांकित प्रश्न संख्या २०९ से २२४ और २२६ से २४० .	८५४–६६
सभा-पटल पर रखे गये पत्र . . .	८६७
राज्य-सभा से संदेश .	८६७
प्रतिलिप्याधिकार, विधेयक—	
राज्य-सभा द्वारा पारित रूप में सभा-पटल पर रखा गया	८६७

सभा का कार्य . . . ८६७

समितियों के लिये चुनाव . . . ८६८

केन्द्रीय रेशम बोर्ड ८६८

भारतीय केन्द्रीय गन्ना समिति . ८६८

भारतीय केन्द्रीय पटसन समिति . ८६८

भारतीय केन्द्रीय नारियल समिति ८६८

कर्मचारी राज्य बीमा निगम ८६९

प्राक्कलन समिति ८६९

लोक-लेखा समिति ८६९

लोक-लेखा समिति में राज्य-सभा के सदस्यों के सम्मिलित किये जाने के बारे में प्रस्ताव . ८६९

कार्य मंत्रणा समिति के पहिले प्रतिवेदन के सम्बन्ध में प्रस्ताव . ८७०

जीवन बीमा निगम (संशोधन) विधेयक . . ८७०—९८, ८९९—९०५

विचार करने का प्रस्ताव . . ८७०

खंड २ से ७ तथा १ . . . ९०४—९०५

संशोधित रूप में पारित करने का प्रस्ताव . . ९०५

संसद्-सदस्यों के वेतन तथा भत्ते (संशोधन) विधेयक—

पुरःस्थापित . . . ८९८

लाइट रेलवे का राष्ट्रीयकरण विधेयक—

पुरःस्थापित ८९८

केन्द्रीय सरकार के कर्मचारी (अंशदायी स्वास्थ्य सेवा योजना में सम्मिलित होने का विकल्प) विधेयक—

पुरःस्थापित ८९८

भारतीय दण्ड संहिता (संशोधन) विधेयक—

पुरःस्थापित ८९८

भारत का रक्षित बैंक (संशोधन) विधेयक तथा भारत का राज्य बैंक (संशोधन) विधेयक— . . ९०५—१५

विचार करने का प्रस्ताव . ९०५

दैनिक संक्षेपिका . ९१६—२१

अंक १३—सोमवार, २७ मई, १९५७

प्रश्नों के मौखिक उत्तर—

तारांकित प्रश्न संख्या ३७५ से ३७९, ३८१ से ३८४, ४१२ और ३८५ से ३९५ . . ९२३—४७

अल्प सूचना प्रश्न संख्या ७ . ९४८

प्रश्नों के लिखित उत्तर—

तारांकित प्रश्न संख्या ३९६ से ४०१ ४०३ से ४१० और ४१३ से ४३५ ९४९—६३

अतारांकित प्रश्न संख्या २४१ से २७६ . ९६३—७९

	पृष्ठ
सभा-पटल पर रखे गये पत्र .	९८०–८१
राज्य-सभा से संदेश	९८१
सदस्य की गिरफ्तारी . . .	९८१
कारोनेशन स्तम्भ के पास गन्दे पानी की टंकी पर हुई दुघटना के बारे में वक्तव्य	९८१—८३
भारत का रक्षित बैंक (संशोधन) विधेयक . .	९८३—८८
विचार करने का प्रस्ताव . .	९८३
खंड २ से ५ और १ . .	९८७–८८
पारित करने का प्रस्ताव .	९८८
भारत का राज्य बैंक (संशोधन) विधेयक .	९८३—८८
विचार करने का प्रस्ताव	९८३
खंड २ से ५ और १ . .	९८७–८८
संशोधित रूप में पारित करने का प्रस्ताव	९८८
१९५३-५४ के लिये अतिरिक्त अनुदानों की मांगें .	९८८–९९१
केन्द्रीय बिक्रीकर (संशोधन) विधेयक	९९१—९६
विचार करने का प्रस्ताव	९९१
खंडवार चर्चा—समाप्त नहीं हुई	९९३—९६
प्रतिलिप्याधिकार विधेयक	९९७—१०१४
विचार करने का प्रस्ताव (राज्य सभा द्वारा पारित रूप में) .	९९७
खंड २ से ७९ और १ .	१००९—११
पारित करने का प्रस्ताव . . .	१०१४
दैनिक संक्षेपिका	१०१५—१९
अंक १४—मंगलवार, २८ मई, १९५७	१०२१
सदस्य द्वारा शपथ ग्रहण	
प्रश्नों के मौखिक उत्तर—	
तारांकित प्रश्न संख्या ४३७ से ४५६, ४५८, ४५९, ४६१ और ४६२ .	१०२१—४३
प्रश्नों के लिखित उत्तर—	
तारांकित प्रश्न संख्या ४३६, ४५७, ४६०, ४६३ से ४६८, ४७० से ४८७, ४८९ से ४९१, ४९३ से ५२२ और ५२४ से ५२८	१०४३—६७
अतारांकित प्रश्न संख्या २७७ से २७९ और २८१ से ३७८ .	१०६७—१११०
सभा पटल पर रखे गये पत्र	११११
विनियोग (संख्या ३) विधेयक, १९५७—	
पुरःस्थापित .	११११

	पृष्ठ
केन्द्रीय बिक्रीकर (संशोधन) विधेयक	११११—१४
खंड ४ से १ . . .	१११३–१४
संशोधित रूप में पारित करने का प्रस्ताव	१११४
सामान्य आयव्ययक—सामान्य चर्चा . .	१११४—५१
दैनिक संक्षेपिका . . .	११५२—५७
अंक १५—बुधवार, २९ मई, १९५७	
प्रश्नों के मौखिक उत्तर—	
तारांकित प्रश्न संख्या ५३० से ५३४, ५३६ से ५४६ और ५४८ से ५५३	११५९—८५
प्रश्नों के लिखित उत्तर—	
तारांकित प्रश्न संख्या ५२९, ५३५, ५४७, ५५४ से ५६०, ५६०-क, ५६१ से ५७४, ५७४—क, ५७५, ५७७, ५७८, ५७८-क, ५७९ से ५९५, ५९५-क, ५९६ से ५९८, ५९८-क, ५९८-ख, ५९९ से ६०१, ६०३, ६०४, ६०४-क, ६०५–६०९, ६०९-क, ६१० से ६१२ और ६१४ से ६१६	११८५—१२११
अतारांकित प्रश्न संख्या ३७९ से ४२३, ४२५ से ४५०, ४५०-क और ४५१ से ४६२	१२११—४४
विशेषाधिकार का प्रश्न . . .	१२४४—४५
सभा-पटल पर रखे गये पत्र	१२४६–४७
अविलम्बनीय लोक महत्व के विषय की ओर ध्यान दिलाना	
बम्बई स्टीम नेवीगेशन कम्पनी द्वारा मालवन में जहाज रोकने की मनाही से उत्पन्न स्थिति . . .	१२४७–४८
अतारांकित प्रश्न के उत्तर में शुद्धि . . .	१२४८
विनियोग (संख्या ३) विधेयक	१२४८—५०
विचार के लिये प्रस्ताव—	१२४८–४९
खंड २ और ३ और १	१२४९–५०
पारित करने का प्रस्ताव	१२५०
सामान्य-आय-व्ययक—सामान्य चर्चा . . .	१२५०—९९
दैनिक संक्षेपिका .	१३००—०६
अंक १६—गुरुवार, ३० मई, १९५७	
प्रश्नों के मौखिक उत्तर—	
तारांकित प्रश्न संख्या ६१७, ६१९ से ६२३, ६२५ से ६२८, ६३०, ६५८-क ६३१ से ६३४, ६३६, ६३७, ६३९ से ६४२ और ६४५ से ६४९	१३०७—३४
अल्प सूचना प्रश्न संख्या ८ से १० . .	१३३४—३७

पृष्ठ

प्रश्नों के लिखित उत्तर--

तारांकित प्रश्न संख्या ६२४, ६२९, ६३५, ६३८, ६४३, ६४४, ६५० से ६७३, ६७३-क, और ६७४ से ६७७ . . . १३३७—५०

अतारांकित प्रश्न संख्या ४६३ से ४९४ . . १३५०—६४

अत्यावश्यक पण्य (संशोधन) विधेयक . १३६४—६६

पुरःस्थापित . . . १३६६

सभा-पटल पर रखे गये पत्र . १३६६-६७

राज्य-सभा से संदेश १३६७

संसदीय परामर्श समितियों के बारे में . . . १३६७-६८

सामान्य आयव्ययक—सामान्य चर्चा . . . १३६८—१४०८

कार्य मंत्रणा समिति—. . . १४०८—१२

दूसरा प्रतिवेदन . . . १४०८

दैनिक संक्षेपिका . . . . . १४१२—१६

अंक १७—शुक्रवार, ३१ मई, १९५७

प्रश्नों के मौखिक उत्तर—

तारांकित प्रश्न संख्या ६७८, ६७७-क, ६८१, ६८२, ६८४, ६८६ से ६९१, ६९३, ६९५, ६९६, ६९८ से ७०२ और ७४३ . . १४१७—४१

अल्प सूचना प्रश्न संख्या ११ से १६ . . . . १४४१—४८

प्रश्नों के लिखित उत्तर—

तारांकित प्रश्न संख्या ६८०, ६८३, ६८५, ६९२, ६९४, ६९७, ७०३ से ७०६, ७०६-क, ७०८ से ७२१, ७२३, ७२४, ७२४-क, ७२५ से ७२७, ७२९ से ७३४, ७३४-क, और ७३६ से ७४२ . . . १४४८—६४

अतारांकित प्रश्न संख्या ४९५ से ५०८, ५१० से ५२७, ५२७-क, ५२८ से ५३२, ५३२-क और ५३३ से ५५९ . . १४६४—८९

प्रभाकरण थम्पन का निधन १४८९

स्थगन प्रस्ताव—

चंडीगढ़ में सत्याग्रह आन्दोलन १४८९-९०

सभा पटल पर रखे गये पत्र १४९०-९१

राज्य सभा से सन्देश १४९१-९२

याचिकायें . १४९२

कार्य मंत्रणा समिति—. . १४९२

द्वितीय प्रतिवेदन

अविलम्बनीय लोक महत्व के विषयों की ओर ध्यान दिलाना . १४९२—९६

१. उत्तर प्रदेश में अल्प आय वर्ग के लिये मकान बनाने की योजना . १४९३

२. सयाजी जुबली काटन एंड जूट मिल्स सिद्धपुर, गुजरात, का बन्द होना १४९४

३. डाक तथा तार विभाग के कर्मचारियों की प्रस्तावित हड़ताल . १४९४-९५

४. भारतीय विमान बल स्टेशन, पूना के विंग संख्या २ के कर्मचारियों द्वारा वेतन न लिया जाना १४९५

५. क्षय रोगियों के लिये एक हॉल के निर्माण के बारे में टी० बी० एसोसियेशन के प्रस्ताव को दिल्ली प्रशासन द्वारा अस्वीकार किया जाना १४९६

दो सदस्यों की गिरफ्तारी और एक को सजा १४९६-९७

नौ-सेना विधेयक—पुरःस्थापित १४९७

सामान्य आय-व्ययक—सामान्य चर्चा . . . . १४९७—१५११

अत्यावश्यक पण्य (संशोधन) विधेयक . . . . १५११—४०

विचार के लिये प्रस्ताव . . . . . १५११—३३

खंड २ और १. . . . . १५३३—४०

पारित करने का प्रस्ताव १५३९-४०

दैनिक संक्षेपिका . . . . . १५४१—४७

सत्र की कार्यवाही का सारांश १५४८

अनुक्रमणिका . . . . . (१—१७०)

नोट:—मौखिक उत्तर वाले प्रश्न में किसी नाम पर अंकित यह + चिन्ह इस बात का द्योतक है कि प्रश्न को सभा में उसी सदस्य ने वास्तव में पूछा था।

लोक-सभा

शुक्रवार, १ मार्च, १९६३
१० फाल्गुन, १८८४ (शक)

लोक-सभा ग्यारह बजे समवेत हुई

[**अध्यक्ष महोदय** पीठासीन हुए]

निधन सम्बन्धी उल्लेख

डा० राजेन्द्र प्रसाद का निधन

†**वित्त मंत्री (श्री मोरारजी देसाई)** : आज सारा राष्ट्र शोकग्रस्त है। क्योंकि भारत के एक विख्यात सपूत डा० राजेन्द्र प्रसाद का निधन हो गया है। उन्हों ने अपने जीवन के सर्वोत्तम वर्ष हमारे स्वतंत्रता संग्राम तथा देश के पुनर्निर्माण में व्यतीत किये। वे महात्मा गांधी के अन्यतम अनुयायियों में से थे तथा उन का गांधी जी के जीवन दर्शन तथा सिद्धान्तों पर अटल विश्वास था। राजेन्द्र बाबू का स्वभाव अत्यन्त विनम्र था। उन के आचरण में विनम्रता और महानता का अद्भुत सम्मिश्रण था। लगभग डेढ़ वर्ष पूर्व वे बहुत गम्भीर रूप से बीमार हुए थे। तथापि ईश्वर ने उन्हें बचा दिया। और कल उन की मृत्यु हो गई।

उन्हों ने अपने जीवन में सेवा, विनम्रता और सच्चाई का जो पथ दिखलाया है वह हमारे लिये सदैव प्रेरणास्पद रहेगा, इस से हम अपने देश को अधिक शक्तिशाली और सम्पन्न बनाने में समर्थ हो सकेंगे।

यह ठीक ही था कि उन्हें पहिले संविधान सभा के अध्यक्ष तथा बाद में भारत गणतंत्र का राष्ट्रपति चुना गया। उस उच्च पद पर और कोई उपयुक्त व्यक्ति नहीं चुना जा सकता था। आज हम शोक संतप्त हैं तथा आप से अनुरोध करते हैं कि हमारी संवेदनायें उन के शोक संतप्त परिवार तक पहुंचा देवें।

†**श्री अ० क० गोपालन** (केसरगोड) : स्वर्गीय राजेन्द्र प्रसाद के निधन पर इस सभा में श्री मोरार जी द्वारा तथा लोक सभा के बाहर अन्यत्र जो विचार व्यक्त किये गये हैं मैं, तथा मेरा दल उन से पूरी तरह सहमत है। डा० प्रसाद एक बहुत प्रिय, विनम्र तथा सरल स्वभाव के व्यक्ति थे। उन का निधन देश के लिये महान् क्षति है।

†**श्री रंगा** (चित्तूर) : स्वर्गीय राजेन्द्र बाबू के सम्बन्ध में श्री मोरारजी देसाई ने जो भी विचार व्यक्त किये हैं मैं उन से पूरी तरह सहमत हूं। यह हमारा सौभाग्य था कि पिछले ३० वर्ष

†मूल अंग्रेजी में।

[श्री रंगा]

तक हम ने उन के साथ कार्य किया । उन का निधन समूचे राष्ट्र की एक महान् हानि है । वह एक कर्मयोगी थे जिन्हों ने हमारे सम्मुख यह प्रदर्शित कर दिया था कि उच्चतम पद पर नियुक्त होते हुए भी वह स्वयं तथा अपने देश और उस की जनता के प्रति ईमानदार थे ।

राजेन्द्र बाबू अपने पवित्र जीवन के अन्त की इस से और सरल तरीके से कामना नहीं कर सकते थे, जिस तरीके से भगवान ने उन के देहावसान के लिये कृपा की । जिस प्रकार उन्हों ने शांतिमय ढंग से जीवन बिताया तथा किसी को कष्ट नहीं दिया उसी प्रकार वह अल्प समय में तथा इतने श्रेष्ठ ढंग से उन का स्वर्गवास हुआ । निश्चय ही वह उसी प्रकार से चिरकाल तक मृतजीवी बनेंगे जिस प्रकार से महात्मा गांधी, महात्मा बुद्ध तथा सम्राट् अशोक हमें अपने उदाहरणों से प्रेरणा देते हैं ।

†**श्री सुरेन्द्रनाथ द्विवेदी** (केन्द्रपाड़ा) : स्वर्गीय राजेन्द्र बाबू के रूप में हम ने एक महान् व्यक्ति और राजनीतिज्ञ खो दिया है । राजेन्द्र बाबू जहां प्राचीन भारतीय संस्कृति के प्रतीक थे वहां गांधी परम्परा की सरलता के ज्वलंत प्रमाण थे । उन्हों ने पूर्ण सम्मान का जीवन बिताया ।

हम आशा करते हैं कि उन के श्रेष्ठ आदर्श तथा काम हमारे सार्वजनिक आचरण तथा निजी जीवन में हमारा पथ प्रदर्शन करेंगे ।

श्री बृजराज सिंह (बरेली) : अध्यक्ष महोदय, स्वतंत्र भारत के इतिहास में इतना बड़ा शोकपूर्ण क्षण कभी नहीं आया । देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद का भारतवासियों के बीच से उठ जाना आज की संकटपूर्ण घड़ी में विशेष रूप से दुःखद है । वे न केवल हमारे युग के सब से महान् नेता थे, बल्कि उन्हों ने भारत को स्वतंत्र कराने और फिर स्वतंत्र भारत को समृद्धि और विजय का मार्ग दिखाने में में भी सक्रिय योग दिया ।

राजेन्द्र बाबू इसलिए महान् नहीं थे कि उन्हों ने स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति का पद प्राप्त किया, बल्कि वास्तव में उन्हों ने इस पद को ग्रहण कर के इस पद को ही महान् बना दिया था ।

एक महान् राजनीतिज्ञ, प्रकांड विद्वान्, कुशल सेनानी, उत्कट देशभक्त, प्रखर विचारक अर्थात् मानव में जितने महान् गुण सम्भव हैं, उन सब का उन के व्यक्तित्व में सामंजस्य था । फिर भी अपनी सादगी से, अपनी अहंकारशून्यता से, उन्हों ने अपना स्थान भारत की ऋषि-परम्परा में बना लिया था ।

राष्ट्रपति-पद से अवकाश ले कर वे जनता के बीच आ गए थे । आज तो उन का मार्ग दर्शन हमें सब से अधिक आवश्यक था । ऐसी ही घड़ी में उन को खो कर हम अनाथ से हो गए हैं । भगवान उन की आत्मा को शान्ति दे ।

मैं अपने जनसंघ दल की ओर से इस महान् संत की दिवंगत आत्मा को हार्दिक श्रद्धांजलियां भेंट करता हूं ।

†**श्री फ्रैंक एंथनी** (नामनिर्देशित आंग्ल-भारतीय) : डा० राजेन्द्र प्रसाद एक अद्भुत आत्मा थे । उल्लेखनीय सफलताओं के बावजूद भी वह एक नम्र तथा सरल व्यक्ति ही रहे । वह सच्चे अर्थों में सद्पुरुष थे ।

---

†मूल अंग्रेजी में

†**श्री याज्ञिक** (अहमदाबाद) : मैं अपने तथा अपने दल की ओर से सभा में व्यक्त किये गये उद्गारों से सहमत हूं। चम्पारन में किसानों की मुक्ति के सम्बन्ध में उन के कार्य के सम्बन्ध में मुझे स्वयं महात्मा गांधी के मुंह से ज्ञात हुआ था। उन्हों ने अपनी नम्रता की भावना से देश के लाखों लोगों के हृदय में स्थान प्राप्त कर लिया था। वह स्वतंत्रता के बहादुर सिपाही थे। वह संविधान सभा के अध्यक्ष रहे और तत्पश्चात् देश के राष्ट्रपति बने।

देश को उन के निधन से भारी क्षति हुई है। और देश उन्हें कई वर्षों तक याद करेगा।

†**डा० मा० श्री० अणे** (नागपुर) : मैं सभा में व्यक्त की गयी भावनाओं से सहमत हूं। डा० राजेन्द्र प्रसाद के निधन से हम ने एक देशभक्त और संत खो दिया है। डा० राजेन्द्र बाबू भारतीय संस्कृति की साकार मूर्ति थे। उन्हों ने सरकार की सेवा करने से अधिक जनता की सेवा करना पसन्द किया।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री (बिजनौर): अध्यक्ष महोदय, राजेन्द्र बाबू के देहावसान से ऐसा प्रतीत होता है कि द्वापर का कोई ऋषि, उपनिषद् काल का, जो कलियुग में जन्म ले कर आया था, आज हमारे मध्य में नहीं रहा। उन की उच्चता, उन की गम्भीरता और उन की दूरदर्शिता, सब से ही आज यह देश वंचित हो गया है। डा० राजेन्द्र प्रसाद के निधन से भारत ही नहीं अपितु भारतीय संस्कृति की भी महान् क्षति हुई है। मैं अपनी और अपने सहयोगियों की ओर से उस महान् आत्मा के चरणों में भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री राम सेवक यादव (बाराबंकी): अध्यक्ष महोदय, प्रातःस्मरणीय श्रद्धेय राजेन्द्र प्रसाद का निधन इस समय राष्ट्र के लिए महान् क्षति है। गांधी के बाद जब कभी इस तरह की समस्यायें होती थीं जिन से कि आज देश दो चार है हम उन्हीं की ओर देखा करते थे। इस समय भी हमें उन की कितनी आवश्यकता थी। उसे देश जानता है। राजेन्द्र बाबू सत्य, सदाचार और सादगी के अवतार थे और मैं उन को अपनी ओर से, अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। आज वे हमारे बीच में नहीं होंगे, फिर भी उन्हों ने अपने त्यागमय जीवन से इस देश का जो महान् शुभ कार्य किया है वह हमारा पथ प्रदर्शन करता रहेगा। हमारे बीच में वे शरीर से नहीं रहेंगे फिर भी हम उन की याद करते रहेंगे।

श्री मौर्य (अलीगढ़) : आदरणीय अध्यक्ष महोदय, आज आदरणीय डा० राजेन्द्र प्रसादजी के निधन के पश्चात् भारत माता की गोद एक ऐसे महान् सपूत से खाली हो गई है जिस ने मानवता की रक्षा के लिए समता की स्थापना के लिये तथा देश की मान मर्यादा को स्थापित रखने के लिये अपना पूरा जीवन संग्राम में रक्खा। आदरणीय डा० राजेन्द्र प्रसाद उन महान् पुरुषों में से थे जोकि महात्मा जी के बहुत नजदीक थे। सदैव ही उन्हों ने सत्यता के लिये संग्राम किया। वे अपने जीवन काल में सादगी के लिये सदैव ही लड़ते रहे। मैं उस महा पुरुष के लिये जिस के निधन से आज पूरा भारतवर्ष ही नहीं बल्कि पूरा संसार शोकाकुल है अपनी ओर से, अपने दल की ओर से और देश के शोषित समाज की ओर से, जिन के लिए उन्हों ने बहुत किया, श्रद्धांजलि अर्पित करते समय यही कहता हूं कि यह एक ऐसी क्षति है जिसे पूरा करना भारतवर्ष के लिये आगे आने वाले बहुत से वर्षों में सम्भव नहीं है।

†**श्री मनोहरन्** (मद्रास दक्षिण) : मैं अपने तथा अपने दल की ओर से वित्त मंत्री द्वारा अभिव्यक्त भावनाओं का समर्थन करता हूं। डा० राजेन्द्र प्रसाद भारत की एक महान् विभूति थे।

---

†मूल अंग्रेजी में

[श्री मनोहरन्]

उन के संतों के समान जीवन और ईमानदारी की लोगों पर अमिट छाप पड़ी है। भारत गणराज्य के राष्ट्रपति के रूप में उन्हों ने देश के लिये महान् कार्य किये।

द्रविड़ मुन्नेत्र कषगम दल उस महान् आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पण करता है।

†**श्री मु० इस्माइल :** डा० राजेन्द्र प्रसाद ऊंचे देशभक्त और लोकप्रिय नेता थे। उन्हों ने दे की जो सेवायें कीं वे अद्वितीय हैं। उन्हों ने अपने आचरण से आदर्श उपस्थित किया। हम सब क उस का अनुसरण करना चाहिए।

डा० गोबिन्द दास (जबलपुर) : अध्यक्ष महोदय, परम पूज्य श्रद्धेय राजेन्द्र बाबू को खो कर इस समय हम ने सब से बड़ी हानि उठाई है। सन् १९२० से ही मैं उन के सम्पर्क में रहा हूं और स्वतंत्रता के संग्राम में उन्हों ने क्या किया यह एक इतिहास का विषय है। उस के बाद स्वतंत्र भारत में संविधान सभा का उन्हों ने जिस प्रकार संचालन किया, शायद उस से बेहतर और कोई नहीं कर सकता था। जो कुछ भारतीय है, भारतीय धर्म, भारतीय संस्कृति, भारतीय न्याय, भारतीय साहित्य, भारतीय भाषा, उन सब के वे मूर्तिमन्त प्रतीक थे। गांधी जी के बाद गांधी जी के मार्ग की ओर हम दो ही व्यक्ति की ओर देखते थे, एक डा० राजेन्द्र प्रसाद जी और एक सन्त विनोबा भावे। अब केवल विनोबा भावे हमारे बीच में रह गये हैं जो उस मार्ग में हमें प्रेरणा देते हैं।

पिछले मई महीने में जब वे यहां से विदा हुए उस समय इस सदन के सब से पुराने सदस्य की हैसियत से मुझे यह भार सौंपा गया था कि उन की विदाई का आयोजन किया जाय। वह आयोजन अपने क्षेत्र का एक विशेष प्रकार का आयोजन था। शायद उस के पूर्व इस प्रकार का आयोजन नहीं हुआ था। उस आयोजना के समय हमें यह मालूम हुआ था कि राजेन्द्र बाबू इस देश की जनता के हृदयों पर किस प्रकार प्रतिष्ठित थे। आधुनिक भारतीय इतिहास में वे प्रथम राष्ट्रपति के रुप में तो अंकित रहेंगे ही, परन्तु उसी के साथ वे सन्त राष्ट्रपति के रूप में भी अंकित रहेंगे। उन में एक अद्भुत मिश्रण था आध्यात्मिक और आधिभौतिक बातों का जोकि हमारी संस्कृति का एक अद्भुत मिश्रण है। जैसे वे उस के प्रतीक थे, मैं समझता हूं कि और कोई उस प्रकार का प्रतीक नहीं है।

इस सदन के सबसे पुराने सदस्य की हैसियत से मैं अपनी ओर से और सबकी ओर से उन के चरणों में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

†**अध्यक्ष महोदय :** डा० राजेन्द्र प्रसाद के निधन पर वित्त मंत्री, विभिन्न दलों के नेताओं तथा अन्य सदस्यों ने जो भावनायें व्यक्त की हैं मैं उन से पूरी तरह सहमत हूं।

डा० राजेन्द्र प्रसाद के निधन से हम ने भारतीय स्वतंत्रता के एक प्रमुख निर्माता खो दिया है। वह गांधी जी के भक्त और सच्चे सहायक थ।

डा० राजेन्द्र प्रसाद १९४६ से १९५० तक संविधान सभा के अध्यक्ष रहे। वे भारत के प्रथम राष्ट्रपति थे उन्हों ने इस पद को १९५० से १९६२ तक सुशोभित किया। उन्हों ने इस उच्च पद के गौरव को निभाया और फिर भी सादा जीवन व्यतीत किया। उन्हों ने राज्य के संवैधानिक अध्यक्ष के योग्य प्रथायें कायम कीं।

---

†मूल अंग्रेजी में

इस वर्तमान संकट के समय उन की प्रखर बुद्धि और दीर्घकालीन अनुभव से बड़ा लाभ होता। उन की मृत्यु से देश को भारी क्षति हुई है।

सभा इस बात से सहमत होगी कि हम उन के शोकसंतप्त परिवार को अपनी संवेदनायें भेजें।

अब सभा दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पण करने के लिये कुछ क्षणों तक मौन खड़ी होगी।

इसके वश्चात् सदस्य कुछ देर तक मौन खड़े रहे।

इसके पश्चात लोक-सभा शनिवार, २ मार्च १९६३/११ फाल्गुन, १८८४ (शक) के ग्यारह बजे तक के लिये स्थगित हुई।

शुक्रवार, १ मार्च १९६३

१० फाल्गुन, १८८४ (शक)

विषय	पृष्ठ
निधन सम्बन्धी उल्लेख	७५५—७५८

सर्वश्री मोरारजी देसाई, अ० क० गोपालन, श्री रंगा, सुरेन्द्रनाथ द्विवेदी, बृजराज सिंह, फ्रैंक एन्थनी, इन्दुलाल कन्हैया लाल याज्ञिक, मा० श्री० अणे, प्रकाशवीर शास्त्री, राम सेवक यादव, बु० प्रिय० मौर्य, कृष्णन् मनोहरन्, मुहम्मद इस्माइल, गोविन्द दास तथा अध्यक्ष महोदय ने डा० राजेन्द्र प्रसाद के, जो १९५० से १९६२ तक भारत गणराज्य के राष्ट्रपति थ, निधन का उल्लेख किया ।

इस के पश्चात् सदस्य दिवंगत आत्मा के सम्मान में कुछ समय तक मौन खड़े रहे और सभा की बैठक स्थगित कर दी गयी ।

शनिवार, २ मार्च, १९६३/११ फाल्गुन, १८८४ (शक) के लिये कार्यावली

रेलवे आयव्ययक १९६३-६४ पर अग्रेतर सामान्य चर्चा तथा विनियोग (रेलवे) विधेयक, १९६३ पर विचार और उस का पारित किया जाना

GMGIPND—L S III—2946(Ai) LSD—3-5-63—160